

mercial banks (including nationalised banks) in December 1976 to issue appropriate guidelines to their branches so that there is easy flow of credit to needy persons for consumption purposes.

Distribution of Cloth

2351. SHRI R. KOLANTHAIVELU: Will the Minister of COMMERCE AND CIVIL SUPPLIES AND COOPERATION be pleased to state:

(a) the method of distribution of cloth manufactured by mills managed by the National Textile Corporation;

(b) the comparative prices of equivalent varieties of cloth *vis-a-vis* cloth manufactured by other mills in private sector;

(c) whether Government are aware that such cloth is scarcely available in the rural areas; and

(d) if so, the steps proposed to secure easy availability of the cloth for weaker sections in rural areas?

THE MINISTER OF COMMERCE AND CIVIL SUPPLIES AND COOPERATION (SHRI MOHAN DHARIA): (a) Cloth manufactured by the mills run by the National Textile Corporation is sold in the market through established channels of wholesale traders and upcountry agents. The cloth is also supplied to some Central Government and State Government Departments. The marketing Division of the NTC (Holding Company) has established a net work of directly managed retail outlets. A part of the production of NTC mills is also exported.

(b) In view of manifold varieties, such a comparison is not feasible.

(c) and (d). NTC has launched a special plan to meet the needs of the rural areas. Besides appointing authorised stockists in semi-urban areas, NTC has linked up its retail shops with Tribal Development Corporation in Orissa, Bihar Panchayat

Raj Finance Corporation Limited, Patna and Civil Supply Corporation of Punjab, Tamil Nadu etc. Efforts are being made to increase such avenues to make NTC cloth available at reasonable rates, to the people in the rural areas.

भागलपुरी रेशम का निर्यात

2352. डा० रामजी सिंह : क्या वाणिज्य तथा नागरिक पूत और सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) प्रति वर्ष कितने मूल्य की भागलपुरी रेशम का निर्यात किया जाता है और क्या इसमें कोई कमी भी आई है ;

(ख) क्या सरकार को पता है कि पिछले वर्षों में भागलपुर हैंड स्पन सिल्क मिल का कोई विकास नहीं हुआ है और यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं तथा इसके विकास के लिए सरकार का क्या कार्यवाही करने का विचार है ;

(ग) क्या कई निजी संस्थान रेशम के निर्यात और आयात का कार्य कर रहे हैं और उनमें से जे० ए० ए० एक्सपोर्टर्स और हिन्दुस्तान सिल्क मिल कम्पनियां गैर-कानूनी ढंग से मजदूरों की छंटनी कर रही है; और

(घ) क्या रेशम उद्योग के विकास के लिए सरकार भागलपुर में रेशम के विकास से सम्बन्धित कोई विश्वविद्यालय खोलने के प्रश्न पर विचार कर रही है और यदि हां, तो इसे कब तक स्थापित कर दिया जायेगा ?

वाणिज्य तथा नागरिक पूत और सहकारिता मंत्री (श्री मोहन धारिया) : (क) भागलपुरी रेशम के निर्यात के पृथक् आंकड़े नहीं रखे जाते हैं। तथापि, टसर रेशम के वस्त्रों के जो अधिकांशतः भागलपुर

में तयार किये जाते हैं, निर्यात, जो 1974-75 में 1.97 करोड़ रु० के हुए थे, बढ़ कर 1975-76 में 2.39 करोड़ रु० के हुए और 1976-77 में 3.36 करोड़ रु० के हुए।

(ख) भागलपुर में कोई भी हैंड स्पन सिल्क मिल नहीं है किन्तु वहां एक स्पन सिल्क मिल है जो बिहार सरकार के एक उपक्रम बिहार राज्य औद्योगिक विकास निगम द्वारा स्थापित की गई है और उसके प्रबन्ध में है। ऐसा बताया जाता है कि 1975-76 के उत्पादन के मुकाबले में वर्ष 1976-77 में इस मिल का उत्पादन बढ़ा है।

(ग) ऐसी निजी पार्टियां हैं जो रेशम का निर्यात कर रही हैं। जे०जे०एक्सपोर्टर्स के प्रबन्धकों ने 53 कर्मचारियों की छंटनी कर दी है। छंटनी के प्रश्न पर प्रबन्धकों और यूनियन के बीच पारस्परिक समझौता था जिसके परिणामस्वरूप यूनियन ने छंटनी को स्वीकार कर लिया है। मै० हिन्दुस्तान सिल्क मिल द्वारा कर्मचारियों की छंटनी किये जाने के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

(घ) रेशम के विकास के लिए भागलपुर में किसी विश्वविद्यालय को खोलने की कोई प्रस्थापना इस समय विचाराधीन नहीं है। तथापि, भागलपुर विश्वविद्यालय के अधीन राजकीय रेशम संस्थान, नाथनगर, भागलपुर में रेशम प्रौद्योगिकी का डिग्री कोर्स आरम्भ करने के प्रश्न पर बिहार सरकार विचार कर रही है।

माइका ट्रेडिंग कारपोरेशन द्वारा किया जाने वाला व्यापार

2353. श्री रीतलाल प्रसाद वर्मा : क्या वाणिज्य तथा नागरिक पूति और

सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) माइका ट्रेडिंग कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड ने 1 जून, 1974 के बाद, जब से इसने कार्य करना शुरू किया है, अब तक कितने रुपयों का व्यापार किया है ;

(ख) माइका ट्रेडिंग कारपोरेशन ने किन-किन अन्नक व्यापारियों से अन्नक खरीदा और क्या माइका ट्रेडिंग कारपोरेशन ने बड़े निर्यातकर्ताओं को प्राथमिकता दे कर कमजोर श्रेणी के अन्नक व्यापारियों की उपेक्षा करके उन सभी को बेकार कर दिया है ; और

(ग) क्या इससे उन नीतियों की उपेक्षा नहीं हुई है जिन्हें लेकर माइका ट्रेडिंग कारपोरेशन गठित किया गया था और यदि हां, तो इस मामले में सरकार का क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

वाणिज्य तथा नागरिक पूति और सहकारिता मंत्री (श्री मोहन धारिया) :

(क) मिटको द्वारा 1 जून, 1974 से 31 मई, 1977 तक किये गये व्यापार का मूल्य निम्नोक्त प्रकार है :

(करोड़ रु०)	
खरीद	बिक्री
10.33	13.29

(ख) मिटको सैकड़ों व्यापारियों से अन्नक खरीदता रहा है। वह अपनी खरीदारियों व्यापार के कमजोर वर्ग से ही करता है, ऐसा वह उसी हालत में नहीं करता जब कि उसे अपनी बिक्री सम्बन्धी वचनबद्धताओं को पूरा करने के लिए अपनी आवश्यकता वाली कुछ मर्दे कमजोर